Vol 6 Issue 2 Nov 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

ISSN: 2249-894X Impact Factor :3.8014(UIF) Volume - 6 | Issue - 2 | November - 2016

Review Of Research

उत्तर मुग़लकालीन शासक मौहम्मदशाह द्वारा कुमाऊँ के समकालीन राजा के नाम जारी सन 1743 के फरमान की ऐतिहासिकता एवं प्रमाणिकता का अध्ययन–विश्लेषण : कुमाऊँ–रुहेला संघर्ष के विशेष संदर्भ में।

प्रवेश कुमार

प्रवक्ता इतिहास , विद्यादीप डिग्री कालेज,बिलासपुर,सहारनपुर,उ.प्र..

सारांश :

राष्ट्रीय अभिलेखागार,नई दिल्ली के संग्रह में उत्तर मुग़लकालीन शासक मौहम्मदशाह (सन१७१९–१७४८)के शासनकाल में ३० रबि–उल–अव्वल,११५६ हिजरी अर्थात २४ मई, सन १७४३ को कुमाऊँ के समकालीन राजा के नाम जारी एक फरमान की नकल (प्रतिलिपि) संरक्षित है,जिसके मसौदे से ज्ञात होता है कि कुमाऊँ के समकालीन राजा ने मुग़ल सम्राट मौहम्मदशाह को नज़राने और पेशकश सहित एक अर्ज़दाश्त प्रेषित कर मुग़ल सम्राट से शाही समर्थन एवं सहायता प्रदान किये के लिए निवेदन किया था। कुमाऊँ के राजा की उस अर्ज़दाश्त के प्रत्युत्तर में मुग़ल शासक मौहम्मदशाह ने कुमाऊँ के राजा के नाम यह फरमान जारी कर उसे शाही समर्थन एवं सहायता प्रदान किये जाने का आश्वासन दिया था। उक्त फरमान की नकल में कुमाऊँ के समकालीन राजा का नाम बाजबहादुरचन्द लिखा गया है[१],जबकि कुमाऊँ के इतिहास ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि मुग़ल शासक मौहम्मदशाह का समकालीन कुमाऊँ का राजा कल्याँणचन्द (सन १७३०–१७४८) था न कि बाजबहादुरचन्द।[२]बाजबहादुरचन्द(सन १६३८– १६७८ई०)तो मुग़ल सम्राट शाहजहाँ का समकालीन था।[३] इस त्रुटि के कारण इस फरमान तथा इसकी उक्त नकल दोनों की ही प्रमाणिकता संदिग्ध हो जाती है और इस फरमान के ऐतिहासिक सत्यापान के विषय में तीन महत्वपूर्ण प्रश्न उठते हैं। प्रथम यह कि क्या वास्तव में मुग़ल शासक मौहम्मदशाह द्वारा यह फरमान जारी किया गया था और दूसरा यह कि यदि वास्तव में यह फरमान जारी किया गया था,तब वह कौन सी परिस्थितियाँ थीं,जिन्होंने कुमाऊँ के राजा को मुग़ल शासक का समर्थन और सहायता प्राप्त करने के लिए बाध्य कर दिया था। यदि परिस्थितिजन्य साक्ष्यों से भी इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है कि मुग़ल शासक मौहम्मदशाह द्वारा कुमाऊँ के समकालीन राजा के नाम उक्त फरमान जारी किया गया था ,तब तीसरा प्रश्न यह उठता है कि फरमान की उक्त नकल में कुमाऊँ के समकालीन राजा कल्याँणचन्द के नाम के स्थान पर बाजबहादुरचन्द का नाम लिखे जाने का क्या कारण हो सकता है?

इन्हीं बिन्दुओं के परिप्रेक्ष्य में उक्त फरमान का अध्ययन-विश्लेषण कर इस फरमान की प्रमाणिकता तथा कुमाऊँ के इतिहास, विशेषकर कुमाऊँ–रुहेला संघर्ष (सन १७२०–१७४५) के संदर्भ में इसके ऐतिहासिक महत्व का परीक्षण प्रस्तुत शोध-पत्र में किया गया है।

प्रस्तावना :

उत्तर मुग़लकालीन कुमाऊँ ,विशेषकर कुमाऊँ–रुहेला संघर्ष (सन १७२०–१७४५) के सन्दर्भ में कुमाऊँ के राजा के नाम जारी मुग़ल शासक मौहम्मदशाह के उक्त विवेचित फरमान का अध्ययन–विश्लेषण करने पर पर ज्ञात होता है कि औरंगज़ेब के शासनकाल के उत्तरार्द्ध में ही कुमाऊँ के तराई भू–प्रदेश के निकटवर्ती कटेहर क्षेत्र में रुहेलों की बस्तियाँ स्थापित होने लगी थीं। रुहेलों का मुख्य व्यवसाय फौजी नौकरियाँ करना था। कालान्तर में दाऊद ख़ाँ नामक एक रुहेला सरदार ने अपने अधीन रुहेला फौजियों का शक्तिशाली दल गठित कर लिया। निकटवर्ती ज़मींदार अपनी ज़मींदारियों की रक्षार्थ उसकी सैनिक सेवायें लेने लगे।[४] कुमाऊँ के समकालीन राजा देवीचन्द(सन १७२०–१७३०) ने दाऊद ख़ाँ को अपने तराई भू–प्रदेशों की सुरक्षार्थ नियुक्त कर दिया। यह तराई प्रदेश बहुत उपजाऊ थे। दाऊद ख़ाँ के कुशल प्रबन्धन तथा सुरक्षा प्रदान किये जाने से इन भू–प्रदेशों से कुमाऊँ के राजा की आय में अत्यधिक वृद्धि होने लगी। अतः उसकी महत्वाकांक्षायें विकसित होने लगी।

उसने अपने धन तथा दाऊद ख़ाँ के सैन्यबल से अपने राज्य के निकट अवस्थित मुग़ल साम्राज्य के भू-क्षेत्र हथियाने का प्रयास किया।[४] फलस्वरूप मुग़ल सेना ने उसको दण्डित करने के लिए सैन्य अभियान आरम्भ किया। मुग़ल सम्राट द्वारा दंडित किये जाने के भय से दाऊद ख़ाँ ने कुमाऊँ के राजा का साथ छोड़ दिया। अतः कुमाऊँ के राजा को धन-बल की पर्याप्त क्षति हुई। मुग़ल सेना ने कुमाऊँ के राजा से उसके काशीपुर और रुद्रपुर जैसे उपजाऊ इलाके भी छीन लिए।[५]

कुमाऊँ के राजा को यह सन्देह हो गया कि दाऊद ख़ाँ ने उसके साथ विश्वासघात किया है।अतः वह प्रतिशोध वश दाऊद ख़ाँ को दंडित करना चाहता। इसी बीच दाऊद ख़ाँ ने कुमाऊँ के राजा से कठोरता पूर्वक अपने रुहेला सैनिकों के अवशेष वेतन की मांग आरम्भ कर दी। कुमाऊँ के राजा ने दाऊद ख़ाँ को रुहेला सैनिकों के अवशेष वेतन ले जाने के बहाने से अल्मोड़ा बुला कर उसकी हत्या करा दी।[७] इस घटना से रुहेलों एवं कुमाऊँ के राजा के बीच प्रतिशोधात्मक शत्रुता उत्पन्न हो गई। कालान्तर में दाऊद ख़ाँ के दत्तक पुत्र एवं उत्तराधिकारी अली मुहम्मद ख़ाँ रुहेला ने कुमाऊँ के राजा देवीचन्द के उत्तराधिकारी राजा कल्याणचन्द(सन १७३०-१७४८) के समय में कुमाऊँ पर निर्णायक विजय प्राप्ति के लिए कुमाऊँ पर आक्रमण की योजना बनाई।[८]

कुमाऊँ पर रुहेलों के इस सम्भावित आक्रमण के संकट को देख कर कल्याणचन्द ने समकालीन मुग़ल शासक मौहम्मदशाह(सन१७१९-१७४८) से सहायता प्राप्ति के लिए अपनी अर्ज़दाश्त अनेक उपहारों सहित मुग़ल दरबार में भेजी थी,जिसके प्रत्युत्तर में मुग़ल शासक मौहम्मदशाह ने कुमाऊँ के राजा के नाम ३० रबि-उल-अव्वल,११५६ हिजरी,तदनुसार २४ मई,सन १७४३ को उक्त विवेचित फरमान जारी कर कुमाऊँ के राजा को सहायता प्रदान किये जाने का आश्वासन दिया था। मौहम्मदशाह स्वयं भी रुहेलों की बढ़ती हुई शक्ति से चिंचित था,परन्तु दरबारी गुटबन्दियों के कारण वह शीघ्र कोई निणर्य नहीं ले सका। समकालीन ऐतिहासिक स्त्रोतों से ज्ञात होता है कि मुग़ल साम्राज्य का वज़ीर कमरुद्दीन रुहेलों से सहानुभूति रखता था। वह दरबार में रुहेला सरदार अली मौहम्मद ख़ाँ का आश्रयदाता बना हुआ था।[९] दूसरी ओर वज़ीर कमरुद्दीन का विरोधी और ईरानी गुट का नेता अवध का सूबेदार सफदरजंग रुहेलों की बढ़ती हुई शक्ति से चिंतित था। वह रुहेलों पर अंकुश लगाने के लिए मौहम्मदशाह पर दबाब डाल रहा था।[१०] इससे पूर्व कि मौहम्मदशाह इस विषय में कोई निणर्य ले पाता,रुहेलों ने कुमाऊँ पर आक्रमण कर कुमाऊँ की राजधानी अल्मोड़ा पर अधिकार कर लिया।[११]

कुमाऊँ पर रुहेलों की विजय एवं कुमाऊँ के विस्तृत उपजाऊ तराई क्षेत्र को रुहेला सरदार अली मौहम्मद ख़ाँ द्वारा अपने अधीन प्रदेश में मिला लिए जाने से मुग़ल साम्राज्य की राजधानी दिल्ली के निकट रुहेले एक ऐसी शक्ति के रूप में संगठित हो गये थे,जिनका दमन करना स्वयं मुग़ल शासक के लिए कठिन हो जाता। अतः मौहम्मदशाह चिंतित हो गया। इस बीच कुमाऊँ का राजा कल्याणचन्द भी रुहेलों द्वारा हथिया लिए गये अपने प्रदेशों को रुहेलों से मुक्त कराये जाने के लिए मौहम्मदशाह से सहायता प्रदान किये जाने की लगातार मांग कर रहा था।[१२] अंततः २५ फरवरी,सन १७४५ को मुग़ल सेना ने रुहेलों के विरुद्ध अभियान आरम्भ किया। यद्यपि रुहेला सेना ने प्रतिरोध किया,परन्तु वह असफल रही। अंततः रुहेला सरदार अली मौहम्मद ख़ाँ ने मुग़ल सेना के सम्मुख समर्पण कर दिया। रुहेलों की पराजय के पश्चात मुग़ल शासक द्वारा कुमाऊँ के राजा को उसके वह भूप्रदेश पुनः प्रदान कर दिये गये,जिन पर रुहेलों ने अधिकार कर लिया था।[१३]

समकालीन ऐतिहासिक परिदृश्य,विशेषकर कुमाऊँ-रुहेला संघर्ष के संदर्भ में मौहम्मदशाह द्वारा कुमाऊँ के समकालीन राजा के नाम जारी ३० रबि-उल-अव्वल,११५६ हिजरी, तद्नुसार २४ मई,सन १७४३ के उक्त विवेचित फरमान का अध्ययन-विश्लेषण करने पर निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैं -

१.इस सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उक्त फरमान में कुमाऊँ के राजा द्वारा मुग़ल सम्राट मौहम्मदशाह को प्रेषित जिस अर्ज़दाश्त का उल्लेख प्राप्त होता है,वह कुमाऊँ के राजा द्वारा रुहेलों के सम्भावित आक्रमण के समय मुग़ल सम्राट से सहायता प्रदान किये जाने से ही सम्बन्धित थी।[१४]

किया था,उसका नाम कल्याणचन्द था। उसने सन १७३० से १७४८ तक कुमाऊँ पर शासन किया और वह वह मुग़ल शासक मौहम्मदशाह (सन १७१९-१७४८) का समकालीन था।

३.कुमाऊँ के स्थानीय इतिहास एवं शाहजहाँकालीन फारसी वृत्तांतकारों दोनों ही स्त्रोतों से स्पष्ट है कि कुमाऊँ का राजा बाजबहादुरचन्द (सन१६३८-१६७८) मुग़ल शासकों शाहजहाँ तथा औरंगज़ेब का समकालीन था,न कि मौहम्मदशाह का।

४.कुमाऊँ-रुहेला संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में उक्त फरमान का अध्ययन-विश्लेषण करने पर जो परिस्थितिजन्य साक्ष्य प्राप्त होते हैं,उनके आधार पर इस फरमान का जारी किया जाना तर्कसंगत तथा औचित्यपूर्ण प्रतीत होता है।

५.उक्त तथ्यों के आधार पर फरमान की ऐतिहासिकता एवं प्रमाणिकता पर सन्देह किया जाना तर्कसंगत नहीं होगा, परन्तु प्रतिलिपि तैयार करते समय सर्तकता से काम नहीं लिया है।अतः इसमें कुमाऊँ के समकालीन राजा का नाम त्रुटिवश बाजबहादुरचन्द अंकित कर दिया गया है।

सन्दर्भ एवं टिप्पणियाँ :

१.देखिए,कलैन्डर ऑफ एक्वायर्ड डॉक्युमैन्टस,डॉक्युमैन्ट नम्बर २३९९/१,नेशनल आर्काइव्स ऑफ इंडिया.

२.पांडे,बद्रीदत्त,कुमाऊँ का इतिहास,पृ.२८४-२८६,१९३७,अल्मोड़ा एवं डबराल,शिवप्रसाद,उत्तराखण्ड का इतिहास,भाग१०, पृ.१५६-१५७,दोगड्डा गढ़वाल,१९८८.

३.शाहजहाँ तथा औरंगज़ेबकालीन फारसी वृत्तांतकारों के ग्रन्थों जैसे इनायत ख़ाँ का शाहजहाँनामा,ख़ाफी ख़ाँ कृत मुन्तख़ब-उल-लुबाब, अबुलफ़ज़्ल मामूरी कृत तारीख़-ए-औरंगज़ेब आदि में उपलब्ध समकालीन कुमाऊँ से संबधित विवरणों में यह स्पष्ट अंकित है कि कुमाऊँ का राजा बाजबहादुरचन्द (मृत्यु १६७८) शाहजहाँ तथा औरंगज़ेब का समकालीन

था।

४.सरकार,जे.एन.,फॉल ऑफ मुग़ल एम्पायर,वाल्युम १,पृ.४७-४८,१९६४,कलकत्ता,हुसैन,इकबाल,द राइज़ एण्ड डिक्लाइन ऑफ रुहेला चीफटेन्स इन ऐट्टींथ सेंचुरी इन इंडिया,पृ.४५-५०,१९९४,दिल्ली एवं सिद्दीकी,नफीस,रुहेला इतिहास,पृ.२९,२००५, रामपुर.

५.पांडे,बद्रीदत्त,,पूर्वोक्त,पृ.३११ एवं डबराल,शिवप्रसाद,पूर्वोक्त,पृ.१५३.

६.पांडे,बद्रीदत्त,पूर्वोक्त,पृ.३११-३१२,डबराल,शिवप्रसाद,पूर्वोक्त,पृ.१५३एवं एटकिन्सन,ई.टी.,हिमालयन गज़ेटियर,हिन्दी रूपांतर थपलियाल,प्रकाश,भाग २,खण्ड २,पृ.३१४,देहरादून,२००३.

७.सिद्दीकी,नफीस,पूर्वोक्त,पृ.३७,पांडे,बद्रीदत्त,पूर्वोक्त,पृ.३११एवं डबराल,शिवप्रसाद,पूर्वोक्त,पृ.१५३.

८.सिद्दीकी,नफीस,पूर्वोक्त,पृ.५९,डबराल,शिवप्रसाद,पूर्वोक्त,पृ.१६१.

९.हुसैन,इकबाल,पूर्वोक्त,पृ.५२-५४.

१०.ख़ाँ,सआदत,गुलेरहमत,पन्ना१९,पांडुलिपि,रज़ा नेशनल लाइब्रेरी,रामपुर,,पांडे,बद्रीदत्त,पूर्वोक्त,पृ.३२७,डबराल,शिवप्रसाद, पूर्वोक्त, पृ.१६२-१६३.

११.सरकार,जे.एन.पूर्वोक्त,पृ.४८

१२.डबराल,शिवप्रसाद,पूर्वोक्त,पृ.१६८ एवं पांडे,बद्रीदत्त,पूर्वोक्त,पृ.३३०.

१३.पांडे,बद्रीदत्त,पूर्वोक्त,पृ.३३१-३३२.

१४.देखिए,पांडे,बद्रीदत्त,पूर्वोक्त,पृ.३२०.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com